

मुनि ललवि विजयजी कृत हरिवल
मठीनो रास.

जीवदयाफलमाहात्म्यरूप.

ए रासने यथामति शुद्ध करी करुणामय
सम्यक्दृष्टि जनोने वांचवाने अर्थे

श्री. एक जीमसिंह माणके

श्री मोदमयी पत्तन मध्ये

निर्गमनागर नामक मुद्रा संश्रमी छपाई

प्रसिद्ध करायो हे.

सं. १९४५ मध्ये १८८९

अथ
 पंक्ति लब्धिविजय विरचित
 हरिवलमचीनो रास आरंभः
 जयपुर

॥ दोहा ॥

॥ प्रथम धराधव जगधणी, प्रथम श्रमण पण एह ॥
 प्रथम तीर्थंकर जग जयो, प्रथम गुरु पण एह ॥ १ ॥
 विश्वस्थिति कारक प्रथम, कारक विश्व उद्योत ॥ धा
 रक अतिशय आदि जिन, तारक नवनिधि पोत ॥ २ ॥
 लघुचय इष्टा इष्टुनी, पारण दिन पण तेह ॥ मिष्ट
 इष्ट जेहने सदा, नानिन्दन प्रणमेह ॥ ३ ॥ सिद्धव
 धूना संगमें, अठक ठक्यो दिन रात ॥ हुं तस पदपंक
 ज नमुं, नित्य उठी परजात ॥ ४ ॥ हंसासन जे स
 रसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन केरा हृद
 यमें, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥ ते हुं प्रणमुं नारती,
 वारति जड अंधार ॥ मुज मन मंदिरमें बसी, करवा
 मुज उपगार ॥ ६ ॥ माता मुज महोटो करी, देजें व
 चन रसाल ॥ रंगरंगीली जनसजा, सांचले थइ उज

माल ॥ ७ ॥ जे हुं चाहुं चित्तमें, ते तूं करजे मात
 ॥ वचननी रचना रस दियो, बाधे तुऊ आख्यात ॥
 ॥ ८ ॥ गुरु ज्ञाता माता पिता, गुरुथी अधिक
 न कोय ॥ देवधर्म गुरु उलख्या, बलिहारी गुरु सो
 य ॥ ९ ॥ ते गुरु चरण नमी करी, नवियणने हित
 कार ॥ रास रचुं हरिवल तणो, पुण्य उपर अधि
 कार ॥ १० ॥ पुण्यें वंठित पामीयें, पुण्यें लहि नव
 नीध ॥ पुण्यें महिला संपजे, पुण्यें रूढ समृद्ध ॥ ११
 जीवदयां पाली जिणें, तिण उपराज्युं पुण्य ॥ सुर नर
 तस सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव
 दयायकी पामियो, हरिवल मल्ली राय ॥ तास संबंध
 सुणतां थकां, सघलां पातक जाय ॥ १३ ॥ रास स
 रस सुणतां थकां, जे को करजे वात ॥ तेहने तस व
 द्धन तणो, सम देउं ठउं सात ॥ १४ ॥ जिम मृग नाद
 लिणो रहे, निसुणो थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो नवि
 यण तुमें, आणी चित्त अजंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ लक्ष योजननो रे जंबुद्वीप
 ए कह्यो, शाश्वत वर्तुलाकार ॥ सोजागी ॥ तेहमें दे
 त्र ए नंद सोहामणुं, कुलगिरि सात कह्या सार ॥

सो० ॥ १ ॥ नाव धरीने रे नवि तुमें सांजलो ॥ रसि
 या देई रे कान ॥ सो० ॥ सुणतां सुणतां रंग रस क
 पजे, मुखमें राख्यां जिम पान ॥ सो० ॥ २ ॥ ना० ॥ क्षेत्र
 तिनमें करमी वसे तिहां, असि मशि कृपी रोजगार ॥
 सो० ॥ आजीविकायें जीव जीवाडवा, आख्या ए
 तीन व्यापार ॥ सो० ॥ ३ ॥ ना० ॥ बीजां क्षेत्र जे जुगलां
 धर्मनां, नाख्यां अकरमि उदार ॥ सो० ॥ तिहां को
 व्यापार तीनमें नवि लहे, ठे कल्पवृक्षना आहार ॥
 सो० ॥ ४ ॥ ना० ॥ तेहमें पटयुगलादिक क्षेत्र जे, नरत ने
 ऐरवत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुद्वीपमां, शो
 नित शोने ठे एह ॥ सो० ॥ ५ ॥ ना० ॥ ए नव क्षेत्र सात
 ठे कुजगिरि, तेहनो अतिही विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र
 समास में गुरुमुख सांजली, धाखो तास विचार ॥
 सो० ॥ ६ ॥ ना० ॥ पण इहां हरिवल मढी रायनुं, चरित्र सु
 णो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक उखाणो जगमां इम
 कहे, जे परणो ते गवाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ ना० ॥ हवे
 इहां जंबुद्वीपें अति ननुं, नरत क्षेत्र कहाय ॥ सो०
 ॥ पांचवों उद्दीश योजन पटकला, धनुषाकारें सोहा
 य ॥ सो० ॥ ८ ॥ ना० ॥ सहस वत्रीश ते जन
 पद तेहमां, तेहना खत खंम होय ॥ सो० ॥ तिण

वचमें पड्यो वैताढ्य रजतनो, जोयण पचासनो
 जोय ॥ सो० ॥ ए ॥ जा० ॥ पटरखंममें खंम तिन
 तिन तेणें कस्या, दक्षिण उत्तर श्रेणि ॥ सो० ॥ सो
 ल सोल सहस ए जनपदमें रहे, वसती अनार्य
 नी तेण ॥ सो० ॥ १० ॥ जा० ॥ साढा पचवीश
 आरय अति जला, केकै अर्थ समेत ॥ सो० ॥ श्रीजि
 नधर्मनो वास तिहां लहे, सहस वत्रीश मध्य एत ॥
 ॥ सो० ॥ ११ ॥ जा० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां,
 कनकपुरी अजिधान ॥ सो० ॥ साव सोनामय सुंदर
 शोजती, अमरपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ जा० ॥
 नलिनीगुल्म विमान तणी परें, एकविश नूमि आ
 वास ॥ सो० ॥ रतन जटितमें गोख विराजता, कर
 ता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ जा० ॥ कुंतीआ
 वण परें हटश्रेणि राजती, ठाजती विजयनी पंक्ति
 ॥ सो० ॥ देश देशांतर विणज करे बहु, वरसे वसु
 धारा शक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ जा० ॥ धनवंत धनद
 जंमारी सारिखा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥ सो० ॥
 पंच विषयना रसमेंलीणा रहे, जोगी चातुर लोक ॥
 ॥ सो० ॥ १५ ॥ जा० ॥ षट दरशनना पोपक जन
 बहु, पाळे निज निज धर्म ॥ सो० ॥ घर घर शत्र

कार करे घणा, लेहवा शिव सुख हर्म ॥ सो० ॥ १६ ॥
 ॥ जा० ॥ जिनशासनना देवल दीपतां, वत्रीश थडा
 प्रासाद ॥ सो० ॥ चोराशी मंमप अति चौपछुं, कर
 ता स्वर्गछुं वाद ॥ सो० ॥ १७ ॥ जा० ॥ दंभवजा
 अतिपचनें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥ सो० ॥ ४
 न्य दिवस मुज जिन शिर हुं चढी, पावन करवा मुक
 अंग ॥ सो० ॥ १८ ॥ जा० ॥ श्रीजिन केरी जगति करे
 सदा, नविक जीव अपार ॥ सो० ॥ तीर्थकर पद ते
 उपराजता, रावणनी परें सार ॥ सो० ॥ १९ ॥ जा० ॥
 वरण अढार वसे तिण नगरीयें, जाणियें सुर अव
 तार ॥ सो० ॥ गढ मढ मंदिर पोलि शोजा घणी, नू
 रमणी वरहार ॥ पातांतरा नगर कनकपुरनामें शोज
 तुं, स्वर्गपुरी अनुहार ॥ सो० ॥ २० ॥ जा० ॥ नंदनवन
 सम परिमल वाटिका, चिहुंदिशि नगरीनी पास ॥
 ॥ सो० ॥ वापी कूप सरोवर जल नखां, खटक्रुतु फलें
 सुखास ॥ सो० ॥ २१ ॥ जा० ॥ काल इकाल ते को
 नवि उलखे, अहोनिश सुखनी ठे वात ॥ सो० ॥ ईति
 उपड्व सुपनें नवि जाणे, पुढवीयें प्रगटीए ख्यात
 ॥ सो० ॥ २२ ॥ जा० ॥ कनकपुरीना ए गुण सां
 नली, लाजी लंका तिवार ॥ सो० ॥ जलनिधिमां

जइ बूडी बापडी, जाणे सकल संसार ॥ सो० ॥
 ॥ २३ ॥ जा० ॥ स्वर्गपुरी पण ननमां जइ रही, नि
 सुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनक
 पुरी तणी, दिन दिन चढती ठे लाज ॥ सो० ॥ २४ ॥
 ॥ जा० ॥ कनक पुरीनां रे वयण वखाणतां, पनणी
 पहेली ए ढाल ॥ सो० ॥ लब्धिविजय कहे नवियण
 सांजलो, आगल वात रसाल ॥ सो० ॥ २५ ॥ जा० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ तिण नगरीयें राजवी, वसंतसेन नूपाल ॥ न्यायि
 निपुण वसुदेव ज्युं, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ वाक्य
 बढल हरिचंद जिस्यो, जुजवलि नीमसमान ॥ अरिय
 ए सधला वश करी, ऊतास्यां तस मान ॥ २ ॥ पर
 जाने पाळे सदा, करे हथेली ठांह ॥ दाण जगात
 दिसे नही, करदंम बंधन क्यांह ॥ ३ ॥ करदंम मुनि
 देउल शिरें, बंधन स्त्रीशिरकेश ॥ वसंतसेन नृप इ
 णि परें, पाळे राज्य विशेष ॥ ४ ॥ तस पटराणी पद
 मिनी, रूपें रंज समान ॥ शील सुरंगी शुचमती, व
 संतसेना अनिधान ॥ ५ ॥ मालती मधुकरनी परें,
 प्रीतडी जिम जल मीन ॥ तिम नृपराणी एकमना,
 रंगें रहे लय लीन ॥ ६ ॥ दोगुंडक सुरनी परें, पंचविषय

सुख जोग ॥ नृपराणी विलसे सदा, पूर्वपुण्य संयोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो बाब्हा ॥ जगजीवन ॥ ए देशी ॥

विलसे जोग ते राजवी, वसंतसेना साथ लाल रे ॥ जन्म
सफल लेखे गणे, जाणे पाम्यो आथ लाल रे ॥ १ ॥

सुगुण सनेहा सांजलो, आगल बात रसाल ला ॥

जीवदया पाली जिणें, ते लह्यो मंगल माल ला ॥

॥ २ ॥ सु ॥ राज रुद्धि रमणी घणी, पूरवपुण्यपसाय

ला ॥ सुरपतिनी परें राजवी, पुढवीयें ते गवराय

ला ॥ ३ ॥ सु ॥ पण तस पुत्र ते को नही, तेणें

चिंतातुर होय ला ॥ आय उपाय करे घणा, टेकी न

जागे कोय ला ॥ ४ ॥ सु ॥ देव दाणव जख जो मजे,

तो पण तिणथी न थाय ला ॥ कर्म आगल चालें

नही, जो करे लक्ष उपाय ला ॥ ५ ॥ सु ॥ माहा

देव महोठो महीयलें, लोकमांहे परसिद्ध ला ॥

पार्वती सरखी नारीने, कर्म पुत्र न दीध ला ॥

॥ ६ ॥ सु ॥ तो बीजानुं शुं गजुं, ए सवि कर्मनां

काम ला ॥ कर्म सखाई जो हुवे, मनवंतित फले

ताम ला ॥ ७ ॥ सु ॥ एकनें शुज कर्म करी,

पुत्र तणे घरे पुत्र ला ॥ नाम करे चिहुं खूंटमां,

राखे घरनां सूत्र ला० ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र
विना सही, सूनां तस आगार ला० ॥ प्रेत मंदिर
सम जाणीयें, पुत्र विना घरबार ला० ॥ ९ ॥ सु० ॥ पुत्र
विना गति को नही, पुत्र विना नही स्वर्ग ला० ॥ लौकि
क मतना शास्त्रमें, नाषे ऋषिजन वर्ग ला० ॥ १० ॥ सु० ॥

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तं पि मसाणे, जड न दीसंति
धूलि धूसर छाया ॥ उतं त पडंत रडंत, दो तिनि मिंजा
न दीसंति ॥ १ ॥

॥ ११ ॥ अ० ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गो नैव च नैव च ॥ त
स्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् धर्मं समाचरेत् ॥

॥ पूर्व ढाल ॥

॥ अहोनिश इम चिंता करे, वसंतसेन नूपाल ला० ॥
तिण अवसर एक ज्योतिषी, आवी मल्यो ततकाल ला०
॥ ११ ॥ सु० ॥ आगम नीगमनी कहे, शास्त्र तणे अ
नुसार ला० ॥ एहवो पंक्ति देखीने, नरपति हर
ख्यो अपार ला० ॥ १२ ॥ उठीने प्रणीपत करे,
जाव धरी मनमांहि ला० ॥ मुडा सहित फल फू
लसुं, पुस्तक पूजे उढाहि ला० ॥ १३ ॥ सु० ॥ बे
कर जोडी वीनवे, कीजें करुणा कृपाल ला० ॥ प्रश्न
जुवो प्रभु माहरे, होशे वाल गोपाल ला० ॥ १४ ॥

सु० ॥ तव पंक्ति तक जोइने, वेला साधी सार
 ला० ॥ १५ ॥ सु० ॥ लमनवलें कहे रायने, सांज
 लजो सुविचार ला० ॥ पुत्र तो तुज करमें नही, पूरव
 नावी नोग ला० ॥ पण एक पुत्री ठे सही, पूरव पुण्य
 संजोग ला० ॥ १६ ॥ सु० ॥ रूपें रंजासारिखी, नंदिनी
 तोहोरो तुज ला० ॥ जाणीयें बीजी शारदा, प्रगट
 होइते गुप्त ला० ॥ १७ ॥ सु० ॥ एम कहीने विप्र ते गयो,
 लेइ वंठित दान ला० ॥ नृप मनमें हरख्यो घणुं, जिम
 रवि कज इकतान ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥ विप्र वचन
 ते योगथी, राणी गर्ज धरेय ला० ॥ वसंत ऋतु फल
 फूलगुं, शोजित सुपना लहेय ला० ॥ सु० ॥ १९ ॥ जागी तव
 नृपने कहे, सुपना तणो अधिकार ला० ॥ सांजली
 नृप हरख्यो घणुं, तूठा श्रीकिरतार ला० ॥ २० ॥
 ॥ सु० ॥ हरखित थइ राणी हवे, करे ते गर्जजतन
 ला० ॥ अनुक्रमें भास पूरा थई, जन्मी पुत्री रतन ला०
 ॥ २१ ॥ सु० ॥ दुवां हरख वधामणां, घर घर मंगलमाल
 ला० ॥ लब्धिजय रंगें करी, पनणी बीजी ढाल ला० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ जन्मोद्भव अति हे करे, वसंतसेन नृपाल ॥ मणि
 माणक मोती घणा, वरसे ज्युं वरसाल ॥ १ ॥ कुंकुम

केशर ठाटणां, घीज करेह विशाल॥ सोहव सवि टोले म
 ली, गावे गीत रसाल ॥ ३ ॥ घर घर गूडी उडले, घर
 घर झोणी माल ॥ घर घर तोरण बांधीयां, दीसे जा
 क ऊमाल ॥ ३ ॥ नृत्य करे नटुवा जला, खेले नवनव
 खेल ॥ बंदीजन मूक्या परा, उपजावे रंगरेल ॥ ४ ॥
 इम उडव करतां थकां, बोल्या दिन ते वार॥ नगरीजन
 सहु पोपीया, देई मिष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज कुटुंब
 मेली करि, पुत्री नाम उवीज ॥ सुपन तणा अनु
 सारथी, वसंतसिरी ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन
 दिन वधे, ज्युं वधे इकुदंम ॥ चंडकलाजिम बीजथी, वाधे
 तेज अखंम ॥ ७ ॥ इम करतां वधती थइ, पंचवरसनी
 बाल ॥ गुजजग्न लेई करी, लइ थापी नीशाल ॥ ८ ॥
 खटदरशननां शास्त्र जे, तेहमां थई प्रवीण॥ रंग राग ना
 टक कला, यंत्रवाजित्र मिलीन ॥ ९ ॥ पट जापा लह
 ती मुखें, चोशठ कलानिधान ॥ अग्निनव जाणे शारदा,
 प्रगट थइ सावधान ॥ १० ॥ इम करतां ते अनुक्रमें,
 वरस थयां जब शोल ॥ नवयौवन नारी तणा, उलट्या
 काम कलोल ॥ ११ ॥ मात पिता हरखे घणुं, पुत्री देखी
 ॥ रतन्ना वरनी चिंता चित धरे, करतां कोटियतन्न ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥सुमति सदा दिलमां धरो॥ए देशी॥ तिण नगरीमें
 इक रहे, धीवर हरिवल नाम॥सनेही॥जलचर जीव हणें
 सदा, मेले डुक्कत ठाम ॥सनेही॥१॥ हवे सुणजो तेहनी
 कथा, मूकी सघलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर झख तणी
 परें, विण पइसे ल्यो स्वाद ॥ स० ॥१॥ह०॥ धीवर ते
 जाणे नही, जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ उद्यम उदर
 ने कारणें, करे नित्य करणीकुकर्म ॥स०॥२॥ ह० ॥
 विग्ंधिग् धुरजर पेटने, पेट करावे वेठ ॥स०॥ उत्तम म
 ध्यम प्राणीने, पेट ते हरावे नेट ॥ स० ॥४॥ ह० ॥
 पेटने कारणें जीवडा, जावे देश प्रदेश ॥ स० ॥ जावे
 जलनिधिमारगें, पेटने हेतविशेष ॥ स०॥५॥ह०॥अ
 गम्यांनी करणी करे, चोरी हेरी प्रत्यक्ष ॥स० ॥पेटना
 अर्थी जे अठे, न गणे नक्ष अचक्ष ॥स०॥६॥ ह०
 घात कला खेजे घणुं, नटुआ नटवी जोर ॥ स० ॥
 मावीत्र वेचे ठोरुने, पेटने अर्थे घोर ॥ स०॥७॥ह०॥
 जिनवरयादि मुनिवरा, जावें जे लीये दिख ॥ स० ॥
 ते पण पेटने कारणें, घर घर मागे जीख ॥ स० ॥
 ॥ ९ ॥ ह० ॥ पांमव पांचे रडवड्या, पेटने कारणें
 धीर ॥ स० ॥ हरिचंद सरिखा राजवी, मुंच घरे

वह्यां नीर ॥ स० ॥ ए ॥ ह० ॥ तिम ए उंदरने कार
 ऐं, हरिवल मन्ही जेह ॥ स० ॥ धीवरकुल जनम ज
 ही, जीव हणे ठे तेह ॥ स० ॥ १ ॥ ह० ॥ हलुआकरमी ठे
 घणुं, पण ते लह्युं कुल नीच ॥ स० ॥ कुलाक सब आ
 वी पड्यो, मेले ते कर्मना कीच ॥ स० ॥ ११ ॥ ह० ॥
 एक दिन हरिवल मन्हीयें, जलमें नाखी जाल ॥ स० ॥
 ते जलकंठें मुनिवरु, वेगो ठे सुकृतमाल ॥ स० ॥
 ॥ १२ ॥ ह० ॥ हवे जलमें जाल नाखी तदा, मुनि
 बोव्यो ततकाल ॥ स० ॥ धीवरने प्रतिबोधवा, दे उ
 पदेश रसाल ॥ स० ॥ १३ ॥ ह० ॥ रे प्राणी ए तुं शुं क
 रे, विण अपराधें कर्म ॥ स० ॥ ठे महोदो संसारमां, जी
 वदयानो धर्म ॥ स० ॥ १४ ॥ ह० ॥ जीवदया पाली जिणें,
 लहे कुल उत्तम सार ॥ स० ॥ दुर्गति पडतां जी
 वनें, धर्म निश्चें आधार ॥ स० ॥ १५ ॥ ह० ॥
 पारेवुं शरणें राखवा, काण्युं ते निज अंग ॥ स० ॥ जो
 तुं मेघरथ राजवी, दो पदवी लही रंग ॥ स० ॥ १६ ॥
 ह० ॥ शिवादेविनंदन नेमजी, तजि निज राजुल
 नार ॥ स० ॥ १७ ॥ ह० ॥ पशुवाडो ठोडावियो, आणीमन
 उपगार ॥ स० ॥ जीवदया जे पाले नही, पामे ते दुःख
 अपार ॥ स० ॥ १८ ॥ ह० ॥ सुनूम ब्रह्मदत्त चक्री दो, पडीया

नरक मज्जार ॥ स० ॥ १९ ॥ ह० ॥ माता पितादिक
 बंधवा, पामे वियोग ते मंद ॥ स० ॥ दालिङ् दोहण
 नवि टले, मले न वल्लनचंद ॥ स० ॥ २० ॥ ह० ॥
 हेम दिये को दिन प्रते, देवे को दान सुपात्र ॥ स० ॥
 तेहथी दश गणो लान ठे, जीवजतन करे गात्र ॥
 स० ॥ २१ ॥ ह० ॥ इम उपदेश ते सांजली, बोले
 मन्ही तिवार ॥ स० ॥ शुं करीयें अमें साधुजी, ठे अम
 कुल आचार ॥ स० ॥ २२ ॥ ह० ॥ धीवर कुलें आ
 वी पञ्चा, क्यां रहे गुरुनुं ज्ञान ॥ स० ॥ आजी
 विका ए पेटनी, दीधी करमें निदान ॥ स० ॥ २३ ॥ ह० ॥
 ॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजथी में पण
 लीध ॥ स० ॥ पहेली जालमां जीव जे, तेहने में
 जीवित दीध ॥ स० ॥ २४ ॥ ह० ॥ इणि परें अनि
 ग्रह आदरी, हरिवल वलियो ताम ॥ स० ॥ मुनि पण
 ईज्यां शोधता, पढोता बीजे ठाम ॥ स० ॥ २५ ॥ ह० ॥
 हलुआ करमी जीव जे, तरत लहे उपदेश ॥ स० ॥
 नारे करमी जीवडा, माने नही लवलेश ॥ स० ॥ २६ ॥
 ह० ॥ पापीने प्रतिबोधतां, पत पोतानुं जाय ॥ स०
 ॥ टपलो सराणे चडावीयें, आरीसो नवि थाय ॥ स०
 ॥ २७ ॥ ह० ॥ हरिवलनी परें प्राणीया, गुरुमुखें

होवे जेह ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनवं
 क्षित लहे तेह ॥ स० ॥ २७ ॥ ह० ॥ लखिनिज
 रंगें करी, नाखी ए त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ हरिबल
 जीवदयावकी, लेहगें मंगलमाल ॥ स० ॥ २८ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हरिबल अजिग्रह लेइने, पाठो बलियो जाम ॥
 तिए अवसरें सुर प्रगटियों, सुस्थित जलनिधि साम ॥
 ॥ १ ॥ अचधी ज्ञानी देवता, रूप करे ततकाल ॥
 धीवरनुं मन खोजवा, मठ हुयो मुठाल ॥ १ ॥ धीव
 र ते जलमें जइ, लांवी नाखी जाल ॥ आव जरा
 एो जालमां, लांवी मठ पुठाल ॥ २ ॥ तव धीवर ते
 मठने, मूकें करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदे धरी, पा
 ले ते उलसंत ॥ ४ ॥ बली बीजे आनक जइ, चंभा
 इहमां जाल ॥ नाखी तव फरि मठ ते, आव्यो जा
 ल मठराल ॥ ५ ॥ ते पण बलि मठ मूकीयो, नीय
 म निज संजार ॥ नाखी धीवर जलधिमां, जाल ते
 त्रीजी वार ॥ ६ ॥ बलि फरीने मठ आवियो, जाल
 मां त्रीजी वार ॥ ते पण धीवर मूकीयो, आणी म
 न उपगार ॥ ७ ॥ तव धीवर कहे फरि फरि, आवे
 ए जलमठ ॥ तो सहिनाणी हुं करूं, जिम उजखाये

खड्ड ॥ ७ ॥ हरिवल चित्त इम चिंतवी, कर ग्रहियो
जलजात ॥ कोटें उलखवा सही, कोडी बांधी सात ॥
॥ ढाल चौथी ॥

॥ इमर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी ॥ हरिवल हवे
आघो गयो रे, उंहुं ठे जल ज्यांह ॥ डुरजर उदरने का
रणे रे, जाल नाखी जइ त्यांह ॥ १ ॥ सूरिजन सां
नलजो अवदात ॥ एतो रंग रसीली वात ॥ सू० ॥
फरी पाठो ते जालमां रे, आव्यो चौथी वार ॥ कोटें
कोडी देखी करी, मूक्यो मड्ड विचार ॥ २ ॥ सूरि० ॥
पांचमी ठछी सातमी रे, फरि फरि नाखे जाल ॥ तेम
तेम ते आवी रहे रे, जालमां मड्ड मुठाल ॥ ३ ॥ सू०
॥ तिम तिम ते मड्ड उलखी रे, मूकी थे ततकाल ॥
हरिवल व्रत महेब्बुं नही रे, गुरु उपदेश रसाल ॥
सू० ॥ ४ ॥ इम करतां दिन निर्गम्यो रे, मेहेनत करतां
तेह ॥ तोही पण क्षोन्यो नही रे, मड्डी हरिवल जेह ॥
॥ ५ ॥ सू० ॥ मड्डीनी परीक्षा लही रे, प्रगट थयो
सुरराज ॥ सुर कहे हरिवल माग तुं रे, हुं तूणो तुज
आज ॥ ६ ॥ सू० ॥ सुर वाणी ते सांजली रे, हरि
वल बोळ्यो तिवार ॥ दालिङ् डःख दूरें करी रे, सम
खां करजो सार ॥ ७ ॥ सू० ॥ सांजलि धीवर सुर

कहे रे, आणी मन उल्लास ॥ संजारिश मुऊ जे घ
 डी रे, ते घडी हुं तुऊ पास ॥ ७ ॥ सू० ॥ एम वचन
 देई करी रे, ते सुर गयो निज थान ॥ मढी पण निज
 मंदिरे रे, वलियो थइ साव धान ॥ ८ ॥ सू० ॥ धीवर म
 नमें हरखियो रे, धन धन गुंरुनुं वचन ॥ फलि
 यो अजिग्रह माहरे रे, तूवो सुर दिन धन्य ॥ ९ ॥
 सू० ॥ सागर देव पसायथी रे, हुं थयो महोटी सनाथ
 ॥ आजथी जीव हणुं नही रे, जो ग्रही महोटी वाथ
 ॥ १० ॥ सू० ॥ इम करतां संध्या थई रे, आव्यो न
 यर नजीक ॥ पण निज मंदिर नारीनी रे, मनमें आ
 णी वीक ॥ ११ ॥ सू० ॥ पेट जराइ जडी नही रे,
 जांमरो रांम कुहाड ॥ जाइश जो खाली घरे रे, वेस
 रो लेई राड ॥ १२ ॥ सू० ॥ काली नागणनी परें
 रे, रोपें जरी ठे चंम ॥ ठोकरडांने मारे घणुं रे, बोले
 ज्युं खोखर जंम ॥ १३ ॥ सू० ॥ मुखमांथी जोंग पडे
 रे, कोइ बोलावै बोल ॥ बलगे वाघणनी परें रे, राखे
 नहि तस तोल ॥ १४ ॥ सू० ॥ दीवालीनो परोडी
 यो रे, दीसंती जाणे अलह ॥ आंगण आवे को मा
 नवी रे, देखी जाये गह ॥ १५ ॥ सू० ॥ कूडा बोली
 कर्कशा रे, दे वली अठतां आल ॥ गुण अवगुण जा

एो नहीं रे, परिणामें विकराल ॥ १७ ॥ सू० ॥ उ
 तरे जे वर्ष सातनी रे, जेह पनोती कहाय ॥ पण
 लागि पनोती जन्मनी रे, ते किम उतरी जाय ॥ १८
 ॥ सू० ॥ जाणी वंजुल कोयला रे, एहबुं रूप नीहा
 ल ॥ खाधानी संख्या नही रे, जाणीयें पेटमें काल
 ॥ १९ ॥ सू० ॥ धीवर कहे मुज नारीनां रे, केतां क
 रुंहुं वखाण ॥ पूर्ण पापना जोगयी रे, मली ए कर्म
 प्रमाण ॥ २० ॥ सू० ॥ हरिवल चितहुं चिंतवे रे, न
 जड्यो जलचर जीव ॥ घरे जाबुं तो बोकडी रे, रूठी
 करशे रीव ॥ २१ ॥ सू० ॥ ते माटे वनमें रही रे,
 रजनी जेवं विशराम ॥ दिन उगे घर जाइहुं रे,
 जडशे जीविक ताम ॥ २२ ॥ सू० ॥ इम जाणी ते
 वन्नमें रे, हरिवल रहियो ताम ॥ कालीकाने देवलें
 रे, लीधो तिहां विश्राम ॥ २३ ॥ सू० ॥ धीवर सू
 तो चिंतवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥ एक में जीव
 उगारीयो रे, तो बाधी मुज शर्म ॥ २४ ॥ सू० ॥ तो
 में निश्चें आजयी रे, हणवो नही कदि जीव ॥ जल
 निधिनो धणी देवता रे, फलशे मुज सदीव ॥ २५ ॥
 सू० ॥ परतख देखी पारखुं रे, धीवर हरखें पइठ ॥
 जीवदया धर्म उपरें रे, वेगो रंग मजीठ ॥ २६ ॥

सू० ॥ रजनी मध्य गई तिहां रे, हरिवल सूतो ज्यां
ह ॥ तिण अवसरें जे नीपजे रे, ते सुणजो उगाह
॥ सू० ॥ २७ ॥ चौथी ढाल पूरी थई रे, प्रगटी पु
ण्यनी वेज ॥ लब्धि कहे गुरु देवथी रे, नाखीयें
दुःखने ठेल ॥ २८ ॥ सू० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवि तिण नगरीमां वसे, बीजो हरिवल नाम ॥
वडवखती सुखीयो सदा, व्यवहारी अजिराम ॥ १ ॥
पवित गुणित सधली कला, शीख्यो ठे सावधान ॥
रूपें रतिपति सारिखो, उपे रूप निधान ॥ २ ॥ च
तुराइ तो चकोर ज्युं, कंठें कोकिल कंठ ॥ नोगी केत
की चंग ज्युं, वाको वंस निगंत ॥ ३ ॥ इक दिन चहु
टे संचख्यो, लेइं निज परिवार ॥ नजरें हरिवल निर
खियो, कुमरीयें गोख मजार ॥ ४ ॥ वसंतसिरी नृ
पनी धुआ, उलखी हरिवल तेह ॥ विहुंनी दृष्टि मिली
तिहां, बाध्यो नवलो नेह ॥ ५ ॥ कुमरीनुं मन वेधि
युं, देखी हरिवल रूप ॥ कामातुर अतिही थई, वर
वानी थइ चूंप ॥ ६ ॥ राजचुवनने मारगें, हरिवल
चाब्यो जाय ॥ गोखतलें आव्यो जिसे, खिण एक
तिहां विलमाय ॥ ७ ॥ गोखेंथी पत्री लखी, पडती

मेहली तेह ॥ हरिवल वांची समजियो, वख तुं मुज
 ससनेह ॥ ७ ॥ उंची दृष्टि जोइने, करी समस्या सा
 र ॥ वाचा देइ आवियो, हरिवल निज आगार ॥ ८ ॥
 कुमरीयें पत्री जे लखी, ते सुणजो अधिकार ॥ राम
 तुं सुहणुं नरत परि, फलशे ते श्रीकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ निड्डी वेरण दुइरही ॥ ए देशी ॥ हांजी काली
 चउदशने दिने, कालिकानुं हो देवल ते ज्यांह के ॥
 अखुट खजानो लेइने, मथ्यरात्रें हो दुं आबुं तुं त्यां
 ह के ॥ १ ॥ कुमरीयें पत्रीयें लखी, हरि वलने हो
 तिहां कीधो संकेत के ॥ शीघ्रगति तुमें आवजो, व
 रवाने हो घणुं आणी हेत के ॥ कु० ॥ २ ॥ व्यवहा
 री हरख्यो घणुं, कुमरीनुं हो देखीने चित्त के ॥ एतो
 साचें आवशे, निज घरनुं हो लेइने वित्त के ॥ कु० ॥
 ॥ ३ ॥ पण ए नृपनी नंदिनी, मुज्जयी केम हो निरवाहो
 थाय के ॥ किहां शशली किहां सिंहनी, किहां हंसि
 णी हो किहां वगलुं कहाय के ॥ कु० ॥ ४ ॥ किहां अ
 लसी किहां नागणी, किहां हाथणी हो किहां अज वल
 वंत के ॥ किहां कुमरीने दुं कीहां, किहां सरशव हो
 किहां मेरु महंत के ॥ कु० ॥ ५ ॥ जाति गरीब वणी

क तणी, मर राखे हो सघले संसार के ॥ तो किम कुं
 वरी हुं वरुं, उठी जावे हो जेह ठे व्यवहार के ॥ कुं० ॥
 ॥ ६ ॥ जो नृप जाणे वातडी, घडि एकमें हो नाखे
 तस वेर के ॥ सबल कुटुंब जे पलकमें, लुसी मूके हो
 तेहमें नही फेर के ॥ कुं० ॥ ७ ॥ तो किम वात ए
 हुं करुं, कुल लाजे हो निज तातनुं जेह के ॥ मुंज घ
 रमें ठे पदमणी, किम देहुं हो तेहने हुं ठेह के ॥ ८ ॥
 कुं० ॥ कडुवां फल ठे एहनां, परनारी हो साथें धरे
 राग के ॥ पग पग दोष लहे घणो, नवि पामे हो कि
 हां बेठानो लाग के ॥ ९ ॥ कुं० ॥ किंपाकनां फल
 सारिखां, देखंतां हो घणुं फूटडां जोर के ॥ पण ते
 फल चाख्याथकी, जीव पामे हो मरणांत कठोर
 के ॥ १० ॥ कुं० ॥ जगमें चाले वातडी, करे हासी
 हो सद्गु मलीने लोक के ॥ जिन वचनें पण जाणीयें,
 दुर्गतिनां हो फल पामे रोक के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ राव
 ए मुंज तणी परें, शीश रडवडे हो जूमितलें जेह के ॥
 परनारीना संगथी, बीजानी हो गति निपजे एह के
 ॥ १२ ॥ कुं० ॥ इम जाणी मन वालियुं, व्यवहारी
 हो निज कुल संजाल के ॥ तिहां जावुं नही माहरें,
 जिहां कीधो हो संकेत विशाल के ॥ १३ ॥ कुं० ॥ हवे

कुमरी विरहें करि, थाये व्याकुल हो जावाने तेह के
 ॥ के३ घड़ी ठे एहवी, ज३ देखुं हो हरिवल ससनेहके
 ॥ १४ ॥ कुं० ॥ जेहने लागे प्रीतडी, जाणे तेहने हो
 लागुं ठे प्रेत के ॥ शूनी फरे तस देहडी, विरहानल
 हो चूसी बल लेत के ॥ १५ ॥ कुं० ॥ मन लागुं
 जस उपरें, तस आगल हो बीजो न सुहाय के ॥ खिण
 घरमें खिण आंगणे, रहि न शके हो जाणे लागी
 बलाय के ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बुद्धि अकल जाये परी,
 नवि उकले हो निज घरनुं काम के ॥ फुरि फुरि पंज
 र कश करे, कामी मन हो लुब्धुं जे गम के ॥ १७ ॥
 कुं० ॥ मात पितादिक नवि गणे, नवि माने हो
 निजकुल मरजाद के ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गणे,
 विरहें करि हो मांमे उनमाद के ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कु
 मरी कामातुर थई, हरिवलनो हो विरहो न खमाय
 के ॥ अन्न उदक दो नवि रुचे, बरवाने हो घणुं आ
 कुली थाय के ॥ १९ ॥ कुं० ॥ मणि माणिक हीरा घ
 णा, हेम रजत नें हो मुगतांफल लेय के ॥ थरमां पा
 मरी सावटु, जरतारी हो जलां बख जरेय के ॥ २० ॥
 कुं० ॥ सामथ्री सघली करी, जावाने हो जिहां की
 थो संकेत के ॥ उंट सात जरिया जला, अश्व रतन हो

कुमरी दो छेत के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ रजनी मध्य समे
 वही, दास दासी हो वलि साथें लीध के ॥ दरवाजे
 दरवाने, डव्य आपी हो घणुं राजी कीध के ॥ १२ ॥
 कुं० ॥ पोल उघाडी पोलीये, वहि कुमरी हो जिहां
 संकेत कीध के ॥ कालीकाने देउलें, तिहां पहोती
 हो मनवंतित सिद्ध के ॥ १३ ॥ कुं० ॥ धीवर सूतो
 ठे जिहां, तिहां कुमरी हो आवी उजमाल के ॥ ल
 विध विजय रंगें करि, ढाल पांचमी हो कही रंग
 रसाल के ॥ कुं० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे जागो प्रभु, मूको निडा दूर ॥ आपण
 वहीयें बे जणां, आगल पंथ सनूर ॥ १ ॥ अखुट
 खजानो लेइने, आवी तुं जरपूर ॥ करहा सातें डव्यें न
 स्या, एह ठे तूम हजूर ॥ २ ॥ अश्व रत्न दो लेइने,
 आवी तुं तुम कज्ज ॥ उंध तजी उतावला, आवी च
 डो अइ सज्ज ॥ ३ ॥ हरिबल वणीक ते जाणीने, विन
 बे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहने कहे अ
 अनिराम ॥ ४ ॥ हरिलंकी अप्सर समी, देखी कुमरी
 रूप ॥ धीवर मन विव्हल अयुं, ए गुं दीसे सरूप ॥
 ॥ ५ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, धीवर चिंतें ताम ॥

कोशक वात विचार ठे, मौन कखानुं काम ॥ ६ ॥
 अणबोव्यो ऊठयो तुरत, करी असवारी सार ॥ कुम
 री मन हरखित थई, चाव्यां पंथ विचार ॥ ७ ॥ पा
 णीपंथा घोडला, तेहवुं करहा जोर ॥ पंथें चाव्या
 चडवडी, पद्दोतां जे वन घोर ॥ ८ ॥ वसंतसिरी कु
 मरी हवे, टाली सवली वीक ॥ हरिवलने बोलाववा,
 आवी पासं नजीक ॥ ९ ॥

॥ ढाल ठछी ॥

॥ पारकर देशथी आयो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिवल
 प्रभुजी बोलो, मनवधन मनहुं खोलो रे ॥ माहारा
 जीवनजी तुमें बोलो ॥ हवे कोई मर मत आणो, प्रभु
 मेव्यो तुम अम टाणो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मुज सरखी
 तुम नारी, विण पेसे मजि सुख कारी रे ॥ मा० ॥
 कनक रयण ने सार्ये, तुमें वावरो सुखें निज हार्ये
 रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा बाघा, जरतारी वां
 धो पाघा रे ॥ मा० ॥ खटरस रसवती सारी, करी
 पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुम संगें रहुं क
 र जोडी, करुं टेहल ते आलस ठोडी रे ॥ मा० ॥ हुं हुं
 तुम प्रेम बिलुद्धी, आवी हुं हुं तुम सूधी रे ॥ मा० ॥
 ॥ ४ ॥ हवे तुम बयण न लोपुं, जीवित जगें वरमा

जा रोपुं रे ॥ मा० ॥ करहा जे साते उप्प्या, लेई तुम गुं
 जे सौप्प्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन मन धन तुम केरुं,
 करि लेखवजो ए नलेरुं रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेहे
 रनी आशा, अमें राखुं प्रेमना पाशा रे ॥ मा० ॥ ६ ॥
 इणि परें कुमरी बोले, पण हरिवल वाचा न खोले
 रे ॥ मा० ॥ तव तिहां कुमरी विमासे, गुं ठे ए वणि
 क न जासे रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करतां थयुं ते वा
 हाणुं ॥ दीतुं मुख श्याम ज्युं जाणुं रे ॥ मा० ॥ दिन
 उगमते ते दीतो, दीन वस्त्र विहूणो धीतो रे ॥ मा० ॥
 ॥ ८ ॥ जाणे आलोकनो पिंग, जाणे पाज्यो देवें
 दंम रे ॥ मा० ॥ देही ठे गलीयल वान, वलि जाणे को
 किल मान रे ॥ मा० ॥ ९ ॥ जाती धीवर जाणी, त
 व कुमरी मन उलजाणी रे ॥ मा० ॥ सुंदरी अई ते
 खा, गशी, चिंते अइ हाणी ने हासी रे ॥ मा० ॥ १० ॥
 आवी पुंज केरे जरूसे, फल चारव्यां आक आजूसे रे
 डो अइ से ॥ जाणुं सुरतरु पामी, पण निमज्यो कनक
 वे कुमरी त ॥ ११ ॥ मा० ॥ प्रजुयें मेरुयें चढावी, पण
 अनिराम ॥ १२ ॥ मा० ॥ कुल मरजादा मूकी,
 रूप ॥ धीवर मति चूकी रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ करस
 ॥ ५ ॥ चमत्कार जा गोफण पण खोई रे ॥ मा० ॥

तिम ए उखाणो मेल्यो, निज मंदिर कुल अचहेल्यो
 रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जाण्युं जोवनवेशें, लेखुं ते ला
 हो विशेषें रे ॥ मा० ॥ उलढ्यो मदन एराकी, तव
 वणिकें मूकी न वाकी रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ विटल
 वणिकें विमासी, दीधी ज्युं कूपके फांसी रे ॥ मा० ॥
 वणिकनो जे करे संग, तस जनम ते खोटो ढंग रे
 ॥ मा० ॥ १५ ॥ जाण्युं जे वणिकने वरखुं, निज ज
 नम ते सफलो करखुं रे ॥ मा० ॥ पापीयें वाचान
 पाली, विण गुनहे मूकी वाली रे ॥ मा० ॥ १६ ॥
 जननी तात मूकावी, मूकी ते विरह जगावी रे ॥
 ॥ मा० ॥ जो तुज खोटा दिलासा, तो शाने दीजें
 आशा रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ फिट रे देव तुं हेल्यो, धी
 वरने किहां ते मेल्यो रे ॥ मा० ॥ तें किहां रची ए
 गोडो, कस्यो अण मलतो ए जोडो रे ॥ मा० ॥ १८ ॥
 दीसे ए धोवड धिंग, वलि जाणे ज्वके जोटिंग रे
 ॥ मा० ॥ जगती जोतां जडियो, मुज करमें ए वर
 घडियो रे ॥ मा० ॥ १९ ॥ शी विघें मुज मन वैसे,
 माहारुं जोवन एलें चहेजो रे ॥ मा० ॥ इम सुंदरी विल
 पंती, लही मूर्छा पडी ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥
 तव तिहां धीवर फरे ॥ मनखुं ते प्रण्य अधरे रे ॥

॥ मा० ॥ में ते ए शुं कीधुं, निज मंदिर मूकी दीधुं
 रे ॥ मा० ॥ ११ ॥ लवलेख पोंक न खाधो, निजकमें
 हाथे दाधो रे ॥ मा० ॥ जे कहे लोक उखाणो, ते में
 तो नजरें पिठाण्यो रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ फोगट सुंदरी सा
 थ, आवी खोई घरनी आथ रे ॥ मा० ॥ ए दुःख के
 हने दाखुं, एहवो नही कोइ जाखुं रे ॥ मा० ॥ १३ ॥
 सुख दुःख जे लख्यां पाने, ते जोगवे जीव एक ताने
 रे ॥ मा० ॥ धीवर मनमें विमासे, रोइ राज न पामे
 उद्वेगसें रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ एतो सुंदरी मोहोटी, कि
 म रांक घरे रहें त्रोटि रे ॥ मा० ॥ रूपें रंजसमान,
 किम सुंदरी दे मुज मान रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ धिग
 मुज जीवित एह, धीवर पणुं लहुं में जेह रे ॥ मा० ॥ मा
 हरुं कुरूप देखी, कुमरीयें नारख्यो उवेखी रे ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ धिग धिग जाति अकामी, मुज देखी मूर्छा
 पामी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखीयो अपार, वहे नय
 णें आंसु धार रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ किहां गयो सागर
 देव, मुज काम पडे इहां हेव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी जे
 मूरठाणी, करे जीवित ते सुख खाणी रे ॥ मा० ॥
 ॥ १८ ॥ जलनिधि सुर तव आवे, धीवरने हर्ष उपा

वे रे ॥ मा० ॥ लब्धि कहे ढाल ठही, कुमरीने करे
हवे वेठी रे ॥ मा० ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर तनमें संक्रमे, ततखिण सागर देव ॥ अमृत
त जल लेई करी, कुमरी ठांटी हेव ॥ १ ॥ रंजा फल
पत्रें करी, कस्यो पवन उपचार ॥ तव कुमरी साजी
थई, पामी चेतन सार ॥ २ ॥ आंख उघाडी निर
खियुं, हरिवल केरुं रूप ॥ वाला चमकी चित्तमें, ए
देव सखुं देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मटी गयो, प्रगट्यो
सोवन वान ॥ अद्भुत कांति शरीरनी, दीपे देव स
मान ॥ ४ ॥ एतो धीवर कुल नही, मन इम चिंते
बाल ॥ ए साधुं के सूरहणुं, के दीसे इंदु जाल ॥ ५ ॥
तिण समे सुरवाणी थई, सांजल कुमरी सुजाण ॥
हरिवल मढी रूप ए, वख तुं पति गुण खाण ॥ ६ ॥
एह थकी सुख संपदा, दिन दिन अधिकी होय ॥
नाग्यवलें तुज वर मख्यो, अण चिंतवियुं सोय ॥ ७ ॥
तव कुमरी हरखित थई, सांजली देव वचन ॥ आर
स चिंता सवि टली, उलखुं ते निज मन्त्र ॥ ८ ॥
बसंतसिरी हरिवल प्रते

मन

॥ शी

पय प्रणमी हरिबल तणा, देई वर ससनैह ॥ सागर
 सुर निज थानकें, पहोतो ते गुणगैह ॥ १० ॥ मान
 व नव सफलो करी, दंपती जोगवे जोग ॥ रामनुं सु
 हणुं नरतने, फलियुं पुण्य संयोग ॥ ११ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शीयालो नलें आवियो ॥ ए देशी ॥ दुआ हे ह
 रख वधामणां, बेहु जणनां हे मनवंबित सीध के ॥
 कुमरी हरिबल वर वरी, मनुजवनो हे फल लाहो
 लीध के ॥ १ ॥ हु० ॥ किहां नृपनंदिनी सुंदरी, किहां
 हरिबल हे मन्त्री अवतार के ॥ अणमलतो ए ताक
 डो, पुण्यजोगें हे मेळ्यो किरतार के ॥ २ ॥ हु० ॥
 एक में जीव उगारीयो, तस पुण्यथी हे तूगो निधि
 राज के ॥ परतख दीतुं पारखुं, गुरुवयणथी हे मुज
 वाधी लाज के ॥ ३ ॥ हु० ॥ धन धन गुरुनां वयण
 ने, मुज कीधो हे महोटी उपगार के ॥ कीडीथकी
 कुंजर कखो, नलें प्रगट्यो हे सदगुरु संसार के ॥ ४ ॥
 हु० ॥ इम चिंतवतां बे जणां, पंथें चाल्यां हे ते वन
 हमजार के ॥ रंग विनोदनी वातडी, वहे करतां हे
 एक चित्त उदार के ॥ ५ ॥ हु० ॥ वाट विषम जे
 आकरी, गिरि गव्हर हे वली विषमा घाट के ॥

अंगि जाडी जे रूखनी, परि उतखा हे निज पुण्यने
 पाट के ॥ ६ ॥ दुः ॥ तिण समे कुमरी चिंतवे, न
 वि जाणुं हे पियुनी कुल नाति के ॥ तो हवे जोबुं
 एहनी, करुं परीक्षा हे ए शी ठे जाति के ॥ ७ ॥ दुः ॥
 जोबुं वली तस पारखुं, पराक्रमे हे केहवो ठे सधीर के ॥
 जीवित सुधी माहरो, मन राखी हे केहवो मेले हीर
 के ॥ ८ ॥ दुः ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सुणी प्री
 तम हे थया खरा वपोर के ॥ पाणीनी तिरपा घ
 णी, पीयु लागी हे घणुं अति हे जोर के ॥ ९ ॥ दुः ॥
 तव हरिबल तिहां सज थयो, अवलानां हे सुणी
 दीन वचन के ॥ केड बांधी काठी खरी, नीर जोवा
 हे निकळो ते वन के ॥ १० ॥ दुः ॥ अटवीमां जो
 तो फरे, नवि दीसे हे क्यांह नदी नवाण के ॥ तव
 एक तरु ऊपर चढी, दृष्टे जोवे हे चिहुं दिशि जल वा
 ण के ॥ ११ ॥ दुः ॥ तव तिहां दूरथी पेखियो, सरो
 वर हे जल जरियुं नीर के ॥ तिहां जइ जल जरि पो
 यणें, लावि पावे हे निज प्यारीने नीर के ॥ १२ ॥
 दुः ॥ अंग ठ्यां जल पीवतां, मनथी लह्यो हे पियु
 माहाबलवंत के ॥ हरखित थइ तव सुंदरी, मुळ व
 खतें हे पियु मलियो संत के ॥ १३ ॥ दुः ॥ धन्य

दिवस धन ते घंडी, धन वेला हे मुंज प्रगट्यां जाग्य
 के ॥ मनवंडित पियुडो मळ्यो, अयां परगट हे मुंज
 सुख सौजाग्य के ॥ १४ ॥ हु० ॥ सुरवाणी साची
 मली, जेवी जाखी हे तेहवी नजरें दीठ के ॥ मुह मा
 ज्या पासा ढळ्या, राजकुमरी हे मन हरख पश्ठ के
 ॥ १५ ॥ हु० ॥ दंपती बेहुने प्रीतडी, एकतारी हे ब
 नी ज्युं नख मांस के ॥ एकंगी जल मीन ज्युं, तिम बे
 हुने हे बनीयुं तन हंस के ॥ १६ ॥ हु० ॥ इम क
 रतां ते अनुक्रमें, विघनाटवी हे परि उतस्यां तेह के ॥
 दूरथी दीतुं सोहामणुं, एक मोटकुं हे शोनित डिं
 ग जेह के ॥ १७ ॥ हु० ॥ कनकजडित डिंग डुर्ग ठे,
 कोशीसां हे मणिमथ दीपंत के ॥ जाणीयें चूरमणी
 करें, सोहे कंकण हे रवितेज जिपंत के ॥ १८ ॥ हु० ॥ नं
 दन वन सम वाटिका, फलि फूली हे चिहुं दिशि सोहंत
 के ॥ सजल सरोवर जल नखां, देखीने हे वर नारी
 मोहंत के ॥ १९ ॥ हु० ॥ नगर समीपें आवीयां,
 वाडीमां हे उतारा कीध के ॥ तिण समे तिहां एक
 आवियो, वैताल कहे नलि आशिष दीध के ॥ २० ॥
 हु० ॥ पूठे हरिवल तेहने, कहो बारोट हे आ नग
 रीतुं नाम के ॥ कुण नृप राज्य करे इहां, अधिकारी